नवपाषाणकालीन संस्कृति—खाद्य उत्पादन का आरम्भ

(NEOLITHIC CULTURE : ADVENT OF FOOD PRODUCTION)

मानव जीवन में प्रथम महत्वपूर्ण क्रान्ति नवपाषाण काल में उस समय हुई जबकि कृषि एवं पशुपालन का शुभारम्भ हुआ। इसके परिणामस्वरूप मानव खाद्य संचयक अवस्था से निकलकर खाद्य उत्पादक बना। अतः खाद्य-उत्पादन का आरम्भ नवपाषाण काल की एक प्रमुख विशेषता है। खाद्य-उत्पादन के अलावा नवपाषाण काल में अनेकानेक सामाजिक, आर्थिक व प्रौद्योगिक परिवर्तन सम्भव हुए। इन परिवर्तनों के परिणाम इस कदर दूरगामी थे कि विद्वानों ने इसे **नवपाषाण क्रान्ति** (Neolithic Revolution) की संज्ञा दी।

भारतीय सन्दर्भ में नवपाषाणकालीन संस्कृति के साक्ष्य लगभग 4000 ई. पू. से मिलना प्रारम्भ होते हैं। यहाँ नवपाषाणकालीन संस्कृति के जो साक्ष्य मिले हैं, उसके आधार पर सर्वश्री **जे. एन. पाण्डेय** महोदय ने इसे भौगोलिक दृष्टिकोण से 6 भागों में वर्गीकृत किया है—

(1) उत्तर भारत, (2) विन्ध्य क्षेत्र, (3) दक्षिण क्षेत्र, (4) मध्य गंगा घाटी, (5) मध्य-पूर्व क्षेत्र, (6) पूर्वोत्तर भारत।

(1) **उत्तर भारत**—इसके अन्तर्गत कश्मीर प्रान्त के **बुर्जहोम** तथा **गुफकराल** उल्लेखनीय हैं। 1935 ई. में **डी. टेरा** एवं **पीटरसन** महोदय ने बुर्जहोम की खोज की। **टी. एन. खजांची** महोदय ने 1940-64 के मध्य यहाँ विधिवत उत्खनन कार्य सम्पन्न कराया। यहाँ की खुदाई से गड्ढे वाले घरों के अवशेष मिले हैं। शवों के साथ-साथ पालतू कुत्तों को भी दफनाने के साक्ष्य मिले हैं। **गुफकराल नामक स्थल की खुदाई 1981 ई. में ए. के. शर्मा** के नेतृत्व में सम्पन्न हुई। यहाँ के उपकरणों में ट्रेप पत्थर की कुल्हाड़ी, बसूली, कुदाल, छेनी, खुरपी, वेधक आदि हैं। हड्डियों से निर्मित उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। मिट्टी के बर्तन भी मिले हैं। जौ, गेहूँ, मटर एवं मसूर

आदि अनाज के दानों का मिलना कृषि कार्य को इंगित करता है। सिल-बट्टे एवं हड्डियों की सुइयों का मिलना दर्शाता है कि इस काल के लोग अनाज पीसने एवं वस्त्र सीने की विधि से परिचित थे। चाक एवं हाथ से निर्मित मिट्टी के घड़े व बर्तन भी मिले हैं। कुछ मिट्टी से निर्मित चूड़ियाँ भी मिली हैं। उक्त सांस्कृतिक साक्ष्यों की रेडियो कार्बन विधि (काल निर्धारण की C-14 विधि) दर्शाती है कि यह संस्कृति मोटे तौर पर 2500 ई. पू. से 1400 ई. पू. तक फली-फूली। अतः विद्वानों ने उत्तर भारत की नवपाषाणकालीन संस्कृति को मेसोपोटामिया की संस्कृति से भी अधिक प्राचीन माना है।

(2) **विन्ध्य क्षेत्र**—विन्ध्य क्षेत्र में नवपाषाणकालीन साक्ष्य सर्वप्रथम मिर्जापुर व बाँदा (उ. प्र.) में खोजे गये। विन्ध्य क्षेत्र के प्रमुख नवपाषाण कालीन पुरा-स्थल इलाहाबाद जिले के बेलन नदी के तट पर स्थित कोल्डिहवा, महगड़ा तथा पंचोह एवं अदवा घाटी के तट पर स्थित इन्दारी है। यहाँ प्राप्त उपकरणों में गोल समन्तान्त वाली पत्थर की कुल्हाड़ियाँ बहुतायत में प्राप्त हुई हैं। लकड़ी के खम्भों को जमीन में गाढ़कर गोलाकार झोंपड़ी बनाने के साक्ष्य मिले हैं। खुरदरे व चमकीले बर्तन मिले हैं, इनमें चौड़े मुँह की हंडिया, तश्तरी व तसले मुख्य हैं। रस्सी के छाप वाले बर्तने भी मिले हैं। भेड़, बकरी, सुअर, हिरण आदि की हड्डियों का मिलना संकेत देता है कि इन जानवरों को पाला जाता अथवा शिकार किया जाता होगा। **कोल्डिहवा के उत्खनन की एक विशिष्ट उपलब्धि यह है कि यहाँ पर धान की खेती के प्राचीनतम प्रमाण (ई. पू. 7000-6000) प्राप्त होता है।**

(3) **दक्षिण क्षेत्र**—दक्षिणी भारत के कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु से इस युग के कई साक्ष्य मिले हैं। यहाँ पर कई स्थलों पर पॉलिशदार प्रस्तर कुल्हाड़ियाँ, स्लेटी एवं काले रंग के मिट्टी के बर्तन तथा हड्डी से निर्मित उपकरण मिले हैं। कृषि एवं पशुपालन के भी साक्ष्य यहाँ मिले हैं। गोल एवं चौकोर घर के भी साक्ष्य मिले हैं जो सम्भवतः मिट्टी तथा सरकण्डे की सहायता से निर्मित हुए होंगे। इन साक्ष्यों का काल 2500 ई. पू. से 1000 ई. पू. के मध्य हैं। नवपाषाण काल के सबसे पुराने अवशेष दक्षिण भारत में संगनकल्लू में ली. मैसुरिये सुब्बाराव द्वारा 1964 ई. में उत्खनित किय गये।

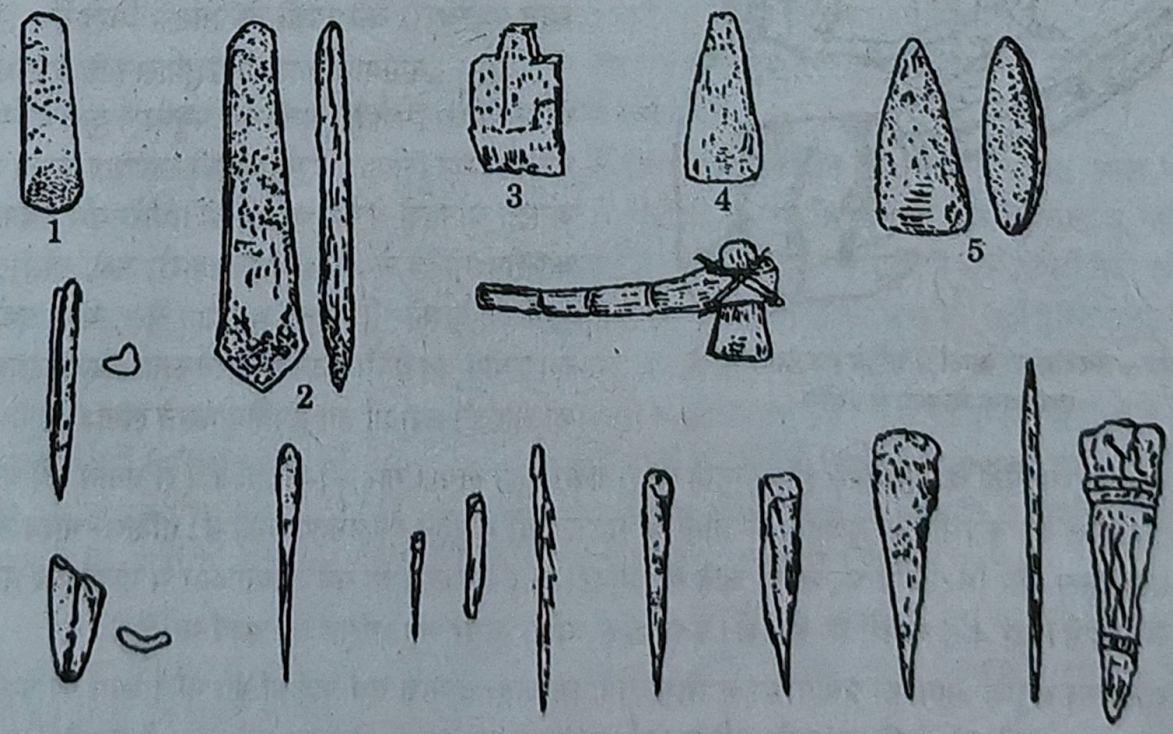

चित्र—नवपाषाण कालीन हड्डी एवं पत्थरों से निर्मित औजार

(4) **मध्य गंगा घाटी**—इस क्षेत्र के अन्तर्गत चिरांद (जिला सारन, बिहार) नामक स्थल से इस संस्कृति के साक्ष्य मिले हैं। यहाँ प्राप्त कुछ सांस्कृतिक साक्ष्य विन्ध्य क्षेत्र से उपलब्ध साक्ष्यों से मेल खाते हैं। फिर भी हड्डियों से निर्मित उपकरणों का बहुतायत में प्राप्त होना इस बात का संकेत देता है कि नवपाषाण कालीन संस्कृति यहाँ स्वतन्त्र रूप से फली-फूली। C-14 कार्बन विधि द्वारा इस संस्कृति का काल 1800 ई. पू. से 1200 ई. पू. निर्धारित किया गया है।

(5) **मध्य-पूर्व क्षेत्र**—इस क्षेत्र के तहत प्रमुखतः बरूडीह (सिंहभूम, बिहार) एवं कुचार्ड (मयूरगंज, उड़ीसा) नामक पुरा-स्थलों पर **डॉ. सेन** व **थापर** द्वारा उत्खनन कार्य कराया गया। यहाँ प्राप्त साक्ष्यों में पॉलिशदार गोल कुल्हाड़ियाँ, बसूली, कुदालें, कटोरे, कलश व घुण्डीदार कलश विशेष हैं। इनका काल 2000 ई. पू. निर्धारित किया गया है।

(6) **पूर्वोत्तर भारत**—1867 ई. में सर्वप्रथम **जॉन लुब्बक महोदय** को ब्रह्मपुत्र घाटी से चमकदार पॉलिशदार उपकरण प्राप्त हुए। असम की पहाड़ियों तथा मेघालय की गारो पहाड़ियों से भी इस संस्कृति के साक्ष्य मिले हैं। इनमें कुल्हाड़ी, हथौड़े, सिल-बट्टे, मूसल आदि प्रमुख हैं। **प्रो. शर्मा** के मतानुसार इस क्षेत्र की नवपाषाण कालीन संस्कृति का उद्भव दक्षिण-पूर्वी एशिया से लगभग 2000 ई. पू. सम्भव हुआ।